भगत धना - सबद १

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥

रागु आसा, भगत धना, गुरु ग्रंथ साहिब, ४८७

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥
लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥
बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥
गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥
जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥
बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥
गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥
प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥३॥
जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥
धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥४॥१॥

सार: समय निकाल कर आत्म-चिंतन करने पर पता चलता है कि जब हम ग़लती से अपनी पहचान को शरीर, मन और भौतिक संपत्ति से जोड़ लेते हैं तब यह हमारी अंतरात्मा को अक्सर थकन देती हैं। हालाँकि यह चीज़ें स्थिरता और नियंत्रण देती लग सकती हैं लेकिन असल में यह स्वभाव से ही अस्थिर हैं, शरीर बूढ़ा होता है, मन डगमगा सकता है और संपत्ति रातों-रात समाप्त हो सकती है। हमारे पास बड़ा घर हो सकता है, हम सफल व्यापार कर सकते हैं, नाम कमा सकते हैं और सोच सकते हैं कि हम सफलता के शिखर पर पहुँच गए हैं। फिर भी, कोई अचानक बीमारी, कोई झगड़ा या आर्थिक संकट सुरक्षा के उस भ्रम को तेज़ी से तोड़ सकता है। यह सोच एक ज़रूरी बात सामने लाती है, असली स्थिरता भरोसेमंद आधार के बिना नहीं मिल सकती। इसके बजाय, यह अपनी क़ीमत और पहचान के लिए बाहरी चीज़ों पर निर्भरता छोड़ने की हमारी क्षमता से आती है जिससे हम भीतरी सच्ची शांति और संतुष्टि पा सकते हैं।

भ्रमत फिरत बहु जनम बिलाने तनु मनु धनु नही धीरे ॥
अनेक जन्मों के चक्र में भटकते हुए, मुझे एहसास होता है कि मेरे शरीर, मन और धन ने मुझे स्थिरता नहीं दी है। यह अज्ञानता के कारण हुए नुक़सान को दर्शाता है क्योंकि मन के विचार, शरीर का आराम और धन का स्वामित्व संतुष्टि नहीं देते।

लालच बिखु काम लुबध राता मनि बिसरे प्रभ हीरे ॥१॥ रहाउ ॥
लालच की गंदगी, असीमित इच्छाओं का आकर्षण और अनमोल मन, इन सबने सर्वव्यापी चेतना से अपना संपर्क खो दिया है। यह स्मरण कराता है कि भ्रम का आकर्षण हमारी अंतरात्मा को हमारे सच्चे स्वरूप से अलग कर देता है। (१)(विराम)

बिखु फल मीठ लगे मन बउरे चार बिचार न जानिआ ॥
ज़हरीला फल मीठा लगता है, एक अज्ञानी, भ्रमित मन यह नहीं समझ पाता कि क्या उसे पोषण देता है और क्या उसे नुक़सान पहुँचा सकता है। यह दर्शाता है कि कैसे हम क्षणभंगुर सुखों को स्थायी खुशी मानकर सच्चे कल्याण को भूल जाते हैं।

गुन ते प्रीति बढी अन भांती जनम मरन फिरि तानिआ ॥१॥
गुणों से दूर होने पर सांसारिक मोह बढ़ता है और जन्म-मरण का चक्र चलता रहता है। यह आकर्षण उस आंतरिक चक्र का प्रतीक है जो मन को इच्छाओं और उनके परिणामों के जाल में फँसाता है। (१)

जुगति जानि नही रिदै निवासी जलत जाल जम फंध परे ॥
यह समझ न पाने के कारण कि सर्वव्यापी चेतना हमारे भीतर ही वास करती है, हम द्वैत के जाल में फंसकर दुख पाते हैं। एकता की इस कमी से डर, असुरक्षा और विभाजन पैदा होते हैं जो हमारे भीतर मौजूद दिव्य तत्व को धुंधला कर देते हैं।

बिखु फल संचि भरे मन ऐसे परम पुरख प्रभ मन बिसरे ॥२॥
ज़हरीले फल जमा करना और उस शाश्वत, सर्वव्यापी शक्ति की महानता को भूल जाना। यह दर्शाता है कि कैसे बार-बार नकारात्मक गुणों को अपनाने से नकारात्मकता ही स्वभाव बन जाती है। (२)

गिआन प्रवेसु गुरहि धनु दीआ धिआनु मानु मन एक मए ॥
जब ज्ञान का बोध होता है तब आध्यात्मिक ज्ञान का धन प्राप्त होता है जिसपर मनन करने से मन एकाग्रता और एकता को अपनाता है। यह ऐसी मानसिकता को दर्शाता है जो एकता की स्थिरता में रची-बसी है।

प्रेम भगति मानी सुखु जानिआ त्रिपति अघाने मुकति भए ॥३॥
भक्त प्रेम और उसके सुख को समझते और अपनाते हैं जिससे उन्हें संतोष और मुक्ति मिलती है। यह बताता है कि आत्मज्ञान तब शुरू होता है जब मन हर इच्छा के लिए तड़पना छोड़ देता है और आंतरिक तालमेल से मिलने वाले संतोष में आराम पाता है। (३)

जोति समाइ समानी जा कै अछली प्रभु पहिचानिआ ॥
जो लोग पूरे मन से समानता को अपनाते हैं, वह डगमगाते नहीं और हर जगह ईश्वरीय ऊर्जा की मौजूदगी को देख पाते हैं। यह अलगाव के विभाजन की समाप्ति और भीतर व बाहर मौजूद एक ही ज्योति की एकता को संजोने का प्रतीक है।

धंनै धनु पाइआ धरणीधरु मिलि जन संत समानिआ ॥४॥१॥
धन्ना ने ईश्वर रूपी धन पा लिया है, वह उस सृष्टिकर्ता से मिल गए हैं जो पूरी सृष्टि को बनाए रखता है और विनम्र व महान, सभी के साथ समान व्यवहार करता है। यह एहसास ही असल ज्ञान है कि पूरी सृष्टि एक ही अखंड स्रोत की अभिव्यक्ति है। (४)(१)

तत्त्व: भगत धन्ना बल देकर कहते हैं कि हम तब तक दुखी रहते हैं जब तक हमें यह समझ नहीं आता कि क्या फ़ायदेमंद है और क्या नुक़सान देने वाला है। जबकि, इच्छाएँ और लगाव शुरू में आकर्षक

लग सकते हैं लेकिन धीरे-धीरे वह हमारी आंतरिक शांति की चमक को कम कर देते हैं। वह शरीर या धन के महत्व को नकारते नहीं हैं बल्कि वह उस भ्रम को चुनौती देते हैं कि इनसे स्थायी संतुष्टि मिल सकती है। जब हमारे जीवन में समझ आती है तब हमें चिंतन, प्रेम और आंतरिक स्थिरता से मिलने वाली सुखद शांति को अपनाने की स्पष्टता मिलती है। जैसे-जैसे यह समझ गहरी होती है, हानिकारक चीज़ों का लगातार चलने वाला चक्र कमज़ोर पड़ने लगता है जिससे भीतरी आत्मा में मौजूद आज़ादी और खुशी का ज़्यादा पूर्ण और गहरा अनुभव होता है।

सबद व्याख्या **विनइंदर कौर** और **अमरदीप सिंह**

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com